



# आलू - मालू - कालू

लेखिका - विनीता कृष्णा

मालू आज पहली बार बगीचे से सब्जी तोड़ने गया। मालू ने तोड़े लाल टमाटर, लम्बे बैंगन और हरी-भरी भिण्डी। दादी ने कहा “शाबाश मालू! जाओ थोड़े आलू भी ले आओ।”

मालू ने सारे पेड़, बेलें और पौधे देखे। आलू कहीं दिखाई नहीं दिये। मालू ने कहा “दादी, आलू अभी उगे नहीं।” मालू ने खाली टोकरी रख दी। “नहीं मालू, बहुत आलू उग रहे हैं, ध्यान से देखो।” दादी ने समझाया।

मालू फिर गया बगीचे में। पीछे-पीछे कालू भी चल पड़ा था। मालू आलू खोज रहा था कि उसे सुनाई दिया, “भौं, भौं, भौं।” “ओ हो! रुक, रुक कालू,” मालू दौड़ा। “बगीचा खराब मत कर।”

मालू ने देखा, कालू ने गड़ड़ा खोदा हुआ था। खुदी मिट्टी में थे मोटे-मोटे आलू! “वाह कालू! ढूँढ निकाले आलू,” टोकरी भर कर बोला मालू।

समाप्त

Click below to follow us:



You Tube

facebook



PRATHAM  
BOOKS

A Book in Every Child's Hand



This story has been provided for free under the CC-BY license by Pratham Books. Originally illustrated by Suvidha Mistry.

